मात्रात्मक क्रांति
QUANTITATIVE REVOLUTION

उद्देश्य विकास आलोचनाएं

(OBJECTIVE DEVELOPMENT CRITICISMS)

CORE-1

परिचय-

- दितीय विश्व युद्ध के बाद वर्णनात्मक भूगोल को अस्वीकार कर सिद्धांतों एवं मॉडलों के निर्माण पर बल दिया जाने लगा इसलिए भूगोल में संख्यिकिय तकनीकीका बृहत पैमाने पर उपयोग किया जाने लगा। भूगोल में मात्रात्मक क्रांति के फलस्वरूप वस्तुनिष्ठता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण उभर कर आया भूगोल में मात्रात्मक विधि का प्रयोग सर्वप्रथम जी के जिस ने किया । इस तरह भूगोल के अध्ययन में वैज्ञानिक एवं गणितीय विधियों का प्रयोग ही मात्रात्मक उपागम कहलाता है।

मात्रात्मक क्रांति के उद्देश्य

- भूगोल का वर्णात्मक विषय से वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक विषय में परिवर्तन।
- भौगोलिक तत्वों के स्थानिक वितरण को तर्कसंगत वस्तुनिष्ठ तथा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना।
- साहित्यिक भाषा के स्थान पर गणितीय भाषा का प्रयोग करना जैसे कोपेन ने विश्व की जलवायु के वर्गीकरण में उष्णकटिबंधीय वर्षा जलवायु के लिए AF अक्षर का प्रयोग किया।
- मॉडलों सिद्धांतों एवं नियमों का निर्माण करना परिकल्पनाओं का निरीक्षण करना तथा अनुमान लगाना एवं भविष्यवाणी करना।
- भूगोल को ठोस सैद्धांतिक एवं दार्शनिक आधार प्रदान करना ताकि इसे एक वैज्ञानिक विषय बनाया जा सके।

मात्रात्मक उपागम का विकास

- भूगोल में मात्रात्मक उपागम के प्रारंभ का श्रेय जी के जिफ को जाता है इन्होंने नगर नियोजन और इसके विकास के लिए कोटि आकार नियम का प्रतिपादन किया। इस सूत्र ने विश्व में नगर नियोजन और नगरीय सेवा केंद्रों के विकास के लिए एक सामान्य सार्वभौमिक नियम दिया और इसका प्रयोग विकसित देशों में प्रमुखता से किया गया।
- यू एस ए का मात्रात्मक क्रांति में बेरी और बुगे का महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होने सेधांतिक भूगोल पुस्तक लिखी और सिद्धांत एवं मॉडल को प्रतिपादित किया।
- मात्रात्मक उपागम के विकास की प्रक्रिया में मानक विचलन विधि बहुचर विधि तथा निकटतम पड़ोसी विधि का प्रयोग किया गया। 1970 के दशक में उपग्रह आधारित अध्ययन का भी प्रयोग किया जाने लगा
- नगरों के प्रभाव क्षेत्र को समझने के लिए तथा मानव के प्रवास संबंधी निष्कर्ष के लिए गुरुत्वाकर्षण मॉडल का प्रयोग किया जाने लगा।

आलोचना

- मात्रात्मक क्रांति के सकारात्मक प्रभाव के साथ ही इससे संबंधित कुछ समस्याएं भी उत्पन्न हुई जिनके कारण इसकी आलोचना भी की गई इसके प्रमुख आलोचक व्यवहारात्मक भूगोल वेत्ताथे। इसके अनुसार भूगोल सामाजिक विज्ञान है इसमें गणितीय सूत्र में माननीय व्यवहारों को स्थान नहीं दिया जा सकता।

निष्कर्ष

मात्रात्मक क्रांति आंकड़ों पर आधारित है अतः आंकड़ों की शुद्धता निष्कर्ष की शुद्धता के लिए आवश्यक है यदि आंकड़े अशुद्ध हो तो निष्कर्ष गलत हो जाएंगे इन्हीं कारणों से मात्रात्मक उपागम के प्रयोग की आलोचना कई भूगोलवेताओं द्वारा की जाने लगी लेकिन इसके बावजूद मात्रात्मक उपागम के प्रयोग में भूगोल को अधिक वैज्ञानिक विश्वसनीय और गत्यात्मक विषय बना दिया।